भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा "जंगली लहसुन की कृषिकरण तकनीक" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 18 मार्च, 2025 को जगतसुख, जिला कुल्लू में जंगली लहसुन के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड द्वारा वित्त पोषित परियोजना "फ्रिटिलेरिया रॉयली (ककोली)-अष्टवर्ग समूह का एक महत्वपूर्ण सुगंधित एवं औषधीय पौधे का सर्वेक्षण, मानचित्रण, खेती की तकनीक का विकास, चयनित जर्मप्लासम का मूल्यांकन तथा आर्थिक अध्ययन" के तहत "जंगली लहसुन की कृषिकरण तकनीक" विषय पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र सह वन विज्ञान केंद्र, भ्रूणधार में किया गया जिसमें ग्राम पंचायत जगतसुख एवं गोज़रा के 40 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया ।

इस अवसर पर प्रशिक्षण समन्वयक डॉ .स्वर्ण लता, वैज्ञानिक-ई ने कहा कि फ्रिटिलेरिया रॉयली एक महत्वपूर्ण औषधीय पौध प्रजाति है जो हिमाचल प्रदेश के उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पायी जाती है । इसे आमतौर पर 'काकोली' एवं 'जंगली लहसुन' के नाम से जाना जाता है तथा यह अष्टवर्ग समूह का एक महत्वपूर्ण घटक है जिस कारण इसका आयुर्वेद, यूनानी, चीनी एवं भूटानी चिकित्सा पद्धति में अत्याधिक उपयोग होता है । यह पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों के उन 18 औषधीय प्रजातियों में से एक प्रजाति है जिनका अत्याधिक व्यापार होता है तथा इसका बाजार भाव लगभग 10,000-15,000 रुपए प्रति कि. ग्रा. है । पिछले कुछ दशकों के दोरान इसके लगातार बढ़ती मांग के चलते इस प्रजाति के अत्याधिक अवैज्ञानिक दोहन के कारण इसके वितरण क्षत्रों में इस प्रजाति की संख्या में अत्याधिक गिरावट आई है जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ ने इस प्रजाति को अतिसंवेदनशील प्रजाति की क्षेणी

में रखा है । इस प्रजाति की बढ़ती मांग एवं लगातार घटते प्राकृतिक आबादी को देखते हुए इसके प्राकृतिक आवास में इसके संरक्षण की अत्यधिक आवश्यकता है तथा औषधीय पौधों के संरक्षण क्षेत्रों की पहचान करना और एक्स-सीटू तरीकों से इसके प्रसार और गुणन के लिए इसकी खेती की तकनीक विकसित करना अत्याधिक आवश्यक हो गया है ताकि व्यवसायिक तौर पर इसकी खेती की जा सके । इसके अलावा, इसके दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए, संरक्षण रणनीतियों जैसे जैव विविधता प्रबंधन समितियों को मजबूत करना, जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से प्रमुख हितधारकों में क्षमता निर्माण और सतत टिकाऊ कटाई प्रथाओं को व्यवहार में लाने की भी अत्यंत आवश्यकता है । इससे न केवल इसके प्राकृतिक आवास पर बढ़ते अनियंत्रित संग्रह के प्रभाव को कम कर पाएंगे अपितु इसकी खेती कर स्थानीय लोग अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं । इसके अतिरिक्त इस पौधे के संरक्षण हेतु स्थानीय लोगों की भागीदारी की भी आवश्यकता है ताकि इनके प्राकृतिक आवास स्थलों के संरक्षण के साथ इसके कंदों की संवहनीयी तरीके से संग्रह हो ।

इसी को मद्देनजर रखते हुए संस्थान द्वारा राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के वितीय सहयोग से इस प्रजाति पर एक परियोजना पूर्ण की है जिसमें इसकी प्राकृतिक आबादी का सर्वेक्षण कर मानचित्रण एवं कृषिकरण तकनीक विकसित किया गया है । वर्तमान में हिमाचल प्रदेश के शीतोषण क्षत्रों में औषधीय पौधों की व्यवसायिक खेती से लोगों के आजीविका सुधार में अपार संभावना है तथा एवं व्यवसायिक खेती से जुड़ कर किसान न केवल अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं अपितु जंगली लहसुन के प्राकृतिक आबादी के संरक्षण में भी योगदान दे सकते हैं । अपने व्याख्यान में उन्होंने जंगली लहसुन की कृषिकरण तकनीक के बारे विस्तृत जानकारी भी किसानों से सांझा की ।
कार्यक्रम में मुख्यतिथि डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक जी (सेवानिर्वित, भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने औषधीय पौधों की टिकाऊ कटाई के तरीके, बाजार मांग एवं बाजार जुड़ाव के बारे जानकारी दी । श्री पिताम्बर सिंह नेगी, वैज्ञानिक-ई ने भी उत्तर पश्चिमी हिमालय में औषधीय पौधों की विविधता, उपयोग एवं वर्तमान खतरों से कार्यक्रम के प्रतिभागियों से अवगत करवाया तथा जंगली लहसुन के संरक्षण में भागीदारी हेतु आग्रह किया । कार्यक्रम के अंत में श्री सुशील, वन रक्षक ने किसानों को औषधीय पौधों के खेती के बारे नर्सरी में फील्ड प्रदर्शन भी करवाया।

औषधीय पौधों की खेती के बारे नर्सरी में फील्ड प्रदर्शन

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

Kullu | Main | 19

धर्मशाला | बुधवार, 19 मार्च 2025 | 2

अवैज्ञानिक दोहन से गिरी काकोली की पैदावार

मनाली में जंगली लहसुन पर हुए कार्यक्रम में भाग लेते किसान-बागवान। -स्रोत : आयोजक

मनाली के जगतसुख गांव में बोलीं प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. स्वर्णलता

संवाद न्यूज एजेंसी

कुल्लू। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने ग्राम पंचायत जगतसुख में जंगली लहसुन (काकोली) के कृषिकरण तकनीक पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड द्वारा वित्त पोषित इस परियोजना के तहत आयोजित शिविर में जगतसुख और गोजरा के 40 किसानों व बागवानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. स्वर्णलता ने बताया कि फ्रिटिलेरिया रॉयली (काकोली या जंगली लहसुन) एक दुर्लभ औषधीय पौधा है, जिसकी बाजार में 10,000 से 15,000 रुपये प्रति किलो तक कीमत है।

उन्होंने कहा कि बढ़ती मांग और अवैज्ञानिक दोहन के कारण इसकी संख्या में भारी गिरावट आई है, जिससे यह संरक्षण के संकट में आ गया है। ऐसे में इसकी खेती और वैज्ञानिक संरक्षण अनिवार्य हो गया है।

उन्होंने कहा कि हिमाचल के शीतोष्ण क्षेत्रों में औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती से किसानों की आय बढ़ सकती है और प्राकृतिक संसाधनों का भी संरक्षण किया जा सकता है। मुख्यातिथि डॉ. जगदीश सिंह पितांबर सिंह नेगी ने भी किसानों को औषधीय खेती की संभावनाओं और संरक्षण के महत्व पर जागरूक किया।